2020-2021

वार्षिक रिपोर्ट

मार्था फैरैल फाउंडेशन

42 तुगलकाबाद इंस्टीट्यूशनल एरिया नई दिल्ली-440062 info@marthafarrellfoundation.org
फोन: 91-11-29960931-33 फैक्स: 91-11-29955183

आभार

पार्टिसिपेटरी रिसर्च इन एशिया
यूनेस्को चेयर इन सीबीआर एंड एसआरएचई
हरियाणा सरकार
दिल्ली सरकार
सिक्किम सरकार
ग्रामीण विकास ट्रस्ट
भारतीय विश्वविद्यालयों का संघ
राष्ट्रमंडल विश्वविद्यालयों का संघ
वी.वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान
एम्बेसी ऑफ द नीदरलैँड्स इन इंडिया
वूमेंस एम्पावरमेंट डेस्क ऑफ द तिब्बतन गवर्नमेंट इन एक्जाइल
घरेलू कामगारों के अधिकारों और आवाजों के लिए नेटवर्क दिल्ली
महिलाओं और लड़कियों के खिलाफ हिंसा समाप्त करने के लिए संयुक्त राष्ट्र ट्रस्ट फंड

और हमारे मित्रों का आभार

जिनके समर्थन ने हमें 2020-2021 में आगे बढ़ाया और हमारे मिशनों को पूरा करने में हमारी मदद की।

विषयसूची

दैनिक जीवन में नारीवाद 04

निदेशक का संदेश 05

हमारा काम 06

अभी तक की उपलब्धियां 07

कार्यस्थलों को सुरक्षित बनाना 08

कदम बढ़ाते चलो 13

मार्था फैरेल अवार्ड 15

मार्था फैरेल मेमोरियल फैलोशिप 17

एक्टिविज्म के 16 दिन 18

सोशल मीडिया समुदाय 20

दैनिक जीवन में नारीवाद

"हर बार जब कोई महिला अपने लिए खड़ी होती है, तो वो बिना यह दावा किये और बिना ये जाने सभी महिलाओं के लिए खड़ी होती है।"

— माया एंजेलो

मार्था फैरेल फाउंडेशन की स्थापना डॉ मार्था फैरेल की याद में की गई थी, जो नागर समाज की एक ऐसी नेतृत्वकर्ता थी जो समाज में सुधार के लिए हमेशा तत्पर रहती थी, वो 43 मई, 2015 को काबुल, अफगानिस्तान में एक गेस्ट हाउस पर आतंकवादी हमले में मारे गए 44 लोगों में से थी। वह उस समय काबुल में आगा खान फाउंडेशन के साथ जेंडर प्रशिक्षण कार्यशाला का नेतृत्व कर रहीं थी।

फाउंडेशन ने अपने दृष्टिकोण और मिशन को डॉ फैरेल के सिद्धांतों के आधार पर बनाया है, जिन्होंने दैनिक जीवन में नारीवाद को जिया उसका पालन किया और आजीवन सीखने को बढ़ावा दिया।

आज, फाउंडेशन दुनिया भर में किशोरों, महिलाओं, पुरुषों और लड़कों के साथ जुड़कर, जेंडर न्याय और इसे व्यक्तिगत, सार्वजनिक और संस्थागत स्तरों पर मुख्यधारा में शामिल करने पर प्रिया- सोसाइटी फॉर पार्टिसिपेटरी रिसर्च इन एशिया में एक निदेशालय के रूप में अपने अग्रणी काम को आगे बढ़ा रही है।

फाउंडेशन उस दुनिया को साकार करने के लिए काम करती है जिसे बनाने के लिए डॉ फैरेल ने प्रयास किया - एक सुरक्षित, जेंडर न्याय वाली दुनिया। अनुभवी और नवोदित सामाजिक विकास प्रोफेशनल की एक टीम की मदद से ये काम किया जा रहा है, जो इस काम से सीखते हैं और इसे लोगो तक पहुंचाते हैं।

निदेशक का संदेश

कोविड-49 महामारी के कारण पिछले साल की शुरुआत में पूरे भारत में सरकार द्वारा लगाए गए लॉकडाउन की वजह से हमारे काम करने के तरीके पर व्यापक प्रभाव पड़ा। प्रशिक्षण सत्र ऑन लाइन तथा सामुदायिक स्थान पहुंच के बाहर हो गए और यात्रा प्रतिबंधों ने हमें अपने घरों तक सीमित कर दिया।

हमने जल्दी ही अपने आप को परिस्तिथि के अनुसार ढाल लिया और इंटरनेट को समुदायों में जहाँ जरूरी था वहां तक पहुंचाया जिससे हमारे काम को किशोरों / किशोरियों कर्मचारियों, स्कॉलर्स और शिक्षाविदों आदि के साथ ऑनलाइन जारी रखा जा सके।

कई मायनों में, इस बदलाव की वजह से बातचीत की संख्या और गुणवत्ता का मार्ग प्रशस्त हुआ - हमने कई वर्चुअल लिसनिंग सर्किल आयोजित किए, हमारे सपोर्ट सर्कल पूरे क्षेत्र में जेंडर आधारित हिंसा से बचे लोगों तक पहुंचे। हमने हर चुनौती को अवसर के रूप में उपयोग किया जिससे हमारे कार्य का प्रभाव अधिक लोगो तक पहुँच सके और हमारा जो लक्ष्य है वो प्राप्त हो।

लॉकडाउन के बाद हमने पहले की तुलना में काम करने का कई मायनों में अधिक मजबूत और अधिक ध्यान केंद्रित करने वाला एक हाइब्रिड मॉडल अपनाया। कोविड -19 ने हमें कई सबक सिखाये है। उन्ही सबक के साथ हम बेहतर होने के लिए, और बेहतर प्रभाव डालने के लिए। आगे बढ़ रहें।

नंदिता प्रधान भट्ट
निदेशक
मार्था फैरेल फाउंडेशन

हमारा काम

चार मुख्य कार्यक्रमों के माध्यम से मार्था फैरैल फाउंडेशन एक ऐसा समाज बनाने के लिए जहाँ जेंडर के आधार पर भेदभाव न हो और आजीवन सीखने को बढ़ावा देने के लिए व्यावहारिक हस्तक्षेप का समर्थन करती है।

कार्यस्थल पर यौन उत्पीडन को रोकने, निवारण करने के लिए कार्यक्रम सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों के संस्थानों में जेंडर को मुख्यधारा में लाने का प्रयास करता है।

भारत भर के युवाओं और किशोरों को कदम बढ़ाते चलो कार्यक्रम जेंडर से सम्बंधित मुद्दों, को स्वयं समझने और समाज को समझाने के लिए जोड़ता है जिससे वो समुदायों में काम का नेतृत्व कर सके।

महिला सशक्तिकरण और जेंडर आधारित न्याय में उत्कृष्टता के लिए मार्था फैरेल पुरस्कार संगठनों और मध्य-कैरियर कार्यकर्ताओं को जेंडर को मुख्य धारा में लाने के काम को मान्यता देता है और उनका समर्थन करता है।

मार्था फैरेल मेमोरियल फेलोशिप का उद्देश्य राष्ट्रमंडल के उच्च शिक्षण संस्थानों में जेंडर समानता, महिलाओं के नेतृत्व और यौन उत्पीड़न को रोकने के प्रोफेशनल तरीको को विकसित करना है।

ये सभी कार्यक्रम विभिन्न सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक स्थानों के लोगों को एक साथ लाते हैं, जेंडर-न्याय के लिए मजबूत नेटवर्क का निर्माण करते हैं जिसकी इस दुनिया में हम में से प्रत्येक को जरुरत है।

अभी तक की उपलब्धियां

33,200+
कार्यस्थलों को सुरक्षित बनाने के लिए औपचारिक और अनौपचारिक कर्मचारी प्रशिक्षित किये गए ।

200+
से अधिक जेंडर प्रशिक्षक प्रशिक्षित किये गए।

350+
से अधिक संस्थानों को प्रशिक्षित किया गया।

3805
युवा नेतृत्वकर्ता प्रशिक्षित किये गए ।

34,000+
से अधिक युवा लीडर्स यौन और जेंडर आधारित हिंसा का मुकाबला करने के लिए एक साथ आये।

800
मार्था फैरेल पुरस्कार के लिए *800* जेंडर चौंपियन नामांकित हुए ।

कार्यस्थलों को सुरक्षित बनाना

कार्यस्थलों को सुरक्षित बनाने के प्रोग्राम ने वर्ष 2020-2021 में औपचारिक और अनौपचारिक क्षेत्र में सुरक्षित, जेंडर न्यायपूर्ण और यौन उत्पीड़न मुक्त कार्यस्थल बनाने की फाउंडेशन की प्रतिबद्धता को आगे बढ़ाया। कोविड-19 महामारी और लॉकडाउन लगने के साथ बेरोजगारी में वृद्धि हुई थी, जिस वजह से खासकर अनौपचारिक क्षेत्र में इस कार्यक्रम की आवश्यकता और बढ़ गई, क्योंकि काम घर से किया जा रहा था तथा मोबाइल फोन और इंटरनेट कनेक्टिविटी की कमी थी।

कार्यक्रम को हाइब्रिड मोड में चलाया गया, जिसमें व्यक्तिगत प्रशिक्षण सत्र ऑनलाइन हो गए और लॉकडाउन के बाद सुरक्षा प्रोटोकॉल के साथ धीरे धीरे इन कार्यक्रमों ने गति पकड़ी । चुनौतियों के बावजूद, ये कार्यक्रम सफलता पूर्वक हर क्षेत्र में कियान्वित हुआ ।

IMPACT IN NUMBERS

400+ कार्यक्रम का प्रभाव संख्या में कार्यस्थलों को सुरक्षित बनाने के लिए औपचारिक और अनौपचारिक कर्मचारी प्रशिक्षित किये गए ।

70+ से अधिक संस्थानों को प्रशिक्षित किया गया ।

30+ से अधिक संस्थानों को प्रशिक्षित किया गया ।

उपलब्धियां

सेफ कैंपस कार्यक्रम

जनवरी 2020 में 'सेफ कैंपस' पर एक राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन: फाउंडेशन द्वारा यूजीसी के जेंडर चौंपियंस और पीओएसएच पर दिशा-निर्देशों / विनियमन के कार्यान्वयन पर भारतीय विश्वविद्यालयों के संघ और पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय (पीआरएसयू) के सहयोग से रायपुर में आयोजित किया गया था और पूरे भारत से विभिन्न विश्वविद्यालयों के छात्रों (कश्मीर, कन्याकुमारी, बिहार, असम आदि) ने इस कार्यक्रम में भाग लिया और उच्च शिक्षण संस्थानों की सुरक्षा में सुधार के लिए महत्वपूर्ण सिफारिशों को साझा किया। इसके साथ ही इसे आधार बना कर सुरक्षा के मुद्दे पर पूरे भारत के उच्च शिक्षण संस्थानों के संकाय और प्रबंधन के प्रशिक्षण सत्रों के साथ 2021 में एआईयू-एमएफएफ सेफ कैंपस प्रोग्राम की शुरुआत हुई।

हरियाणा जिला सरकारों में प्रवेश

हरियाणा के आसपास के जिला प्रशासनों में महिला एवं बाल विभाग के प्रमुख सदस्यों और मुख्यमंत्री के सुशासन सहयोगियों के साथ फाउंडेशन ने कई अन्वेषी बैठकें भी शुरू कीं, जिसमें कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न की रोकथाम, निषेध और निवारण के लिए विभागों और जिला-स्तरीय स्थानीय समितियों में आंतरिक समितियों की स्थापना और प्रशिक्षण पर जोर दिया गया । पानीपत जिले में 40 आंतरिक समितियों और स्थानीय समिति का एक प्रशिक्षण नवंबर के महीने में हुआ, जो चार अन्य जिलों में 2021 में फाउंडेशन द्वारा आयोजित श्रृंखला में पहला था।

40+

पानीपत में आंतरिक समितियों और जिला स्थानीय समिति को यौन उत्पीड़न निवारण अधिनियम, 2013 पर प्रशिक्षित किया गया।

उपलब्धियां

सर्वाइवर्स सपोर्ट सर्कल

वैश्विक #MeToo आंदोलन की वर्षगांठ को मनाने के लिए सर्वाइवर्स सपोर्ट सर्कल नामक एक नया ऑनलाइन कार्यक्रम, कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न को सहने वाले लोगों मे विश्वास और एकजुटता लाने के लिए 16 अक्टूबर, 2020 को शुरू किया गया था। इस विषय पर आयोजित सहायता समूहों की श्रृंखला में पहला कार्यक्रम एक दूसरे की आप बीती सुनने और आपस में विचारो के आदान प्रदान पर आधारित था, इसमें लगभग 60 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम की सफलता के बाद दो दिवसीय सत्रों का आयोजन किया गया, जहां इस कार्यक्रम की वजह से कार्यस्थल में यौन उत्पीड़न झेलने वाले लोगों को पीओएसएच अधिनियम, 2013 और उनके अधिकार का ज्ञान था ।

55+

कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न का सामना करने वाले लोगों के लिए आयोजित पहले ऑनलाइन सर्वाइवर्स सर्कल में 55 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया।

वर्तमान सांझेदारियाँ

फाउंडेशन ने इस वर्ष के दौरान साझेदार संगठनों के साथ कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न के मुद्दे पर कई प्रशिक्षण सत्र भी आयोजित किए। कार्यस्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न (रोकथाम, निषेध और निवारण, अधिनियम, 2013 के अनुपालन के लिए कई लोगों को शुरू से अंत तक समर्थन दिया गया था। इस वर्ष के दौरान एक दूसरों के बीच बनाई, और मजबूत की गई साझेदारियों में सरकारी विभाग, कॉर्पोरेट कार्यालय, गैर-लाभकारी, स्वैच्छिक संगठन और शिक्षण संस्थान शामिल थे।

अनौपचारिक क्षेत्र में प्रभाव

मुख्य रूप से मार्था फैरेल फाउंडेशन अनौपचारिक क्षेत्र में महिला घरेलू कामगारों के साथ जुड़ी है, और उनके लिए काम करने में सहायक माहौल, सुरक्षित, और यौन उत्पीड़न मुक्त कार्यस्थलों के अधिकारों की सुनिश्चितता के लिए काम करती है। पीओएसएच अधिनियम, 2013, का दायरा अनौपचारिक महिला श्रमिकों तक फैला हुआ है, लेकिन घरेलू कामगारों के लिए अधिनियम के तहत न्याय तक पहुंचना मुश्किल है। भारत में घरेलू कामगारों के लिए कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न अधिनियम 2013 के कार्यान्वयन पर राष्ट्रीय स्तर की सलाहकार कार्यशाला जो 2019 में आयोजित की गई थी, इसके विचारों और सिफारिशों को आगे बढ़ाते हुए, वर्ष 2020 के साथ-साथ प्रमुख पहलों के माध्यम से फाउंडेशन ने महिला घरेलू कामगारों की जागरूकता और वकालत की पहल को मजबूत किया।

"घरेलू कामगारों के लिए काम की दुनिया की फिर से कल्पना करना: COVID-19 और उससे आगे": एक राष्ट्रीय स्तर की वर्चुअल राउंडटेबल चर्चा

अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) कन्वेंशन 189 को अपनाने के एक साल बाद, घरेलू कामगारों के लिए उचित कार्य, घरेलू कामगारों ने 16 जून को अंतर्राष्ट्रीय घरेलू कामगार दिवस के रूप में घोषित किया। अंतर्राष्ट्रीय घरेलू कामगार दिवस मनाने के लिए 60 से अधिक घरेलू कामगारों ने 16 जून को एक राष्ट्रीय स्तर के वर्चुअल राउंडटेबल का नेतृत्व किया जिसका शीर्षक था '"घरेलू कामगारों के लिए काम की दुनिया की फिर से कल्पना करना": COVID-19 और उससे आगे' एक राष्ट्रीय स्तर की वर्चुअल राउंडटेबल चर्चा। राउंडटेबल का आयोजन घरेलू कामगारों /संघों और संगठनों के एक नेटवर्क द्वारा किया गया था, जो घरेलू कामगारों द्वारा तैयार किए गए घोषणापत्र को साकार करने के लिए रणनीतियों, घरेलू कामगारों के पंजीकरण के लिए नीतिगत सिफारिशों, सामाजिक सुरक्षा तक पहुंच और कानून पर विचार-विमर्श करने व घरेलू कामगारों के अधिकार और उनका समर्थन करने के लिए आयोजित किया गया था। नेटवर्क फॉर द राइट्स एंड वॉइसेस ऑफ डोमेस्टिक वर्कर्स, दिल्ली के साथ साझेदारी में फाउंडेशन ने पूरे वर्ष में घोषणापत्र के साथ, तैयार की गई नीतिगत सिफारिशों की वकालत के लिए जमीनी स्तर पर पहल की नींव रखी।

4 अक्टूबर, 2020 को ट्वीट स्टॉर्म

घरेलू कामगारों के अधिकारों के लिए काम करने वाली यूनियनों और संगठनों ने अक्टूबर में आम जनता के बीच जागरूकता पैदा करने और संबंधित सरकारी निकायों से कार्रवाई की मांग करने के लिए फाउंडेशन के -

नेतृत्व में, एक ट्विटर स्टॉर्म में भाग लिया। ट्वीट स्टॉर्म में हैशटैग #ValueDomesticWorkers और #HireUsBack का उपयोग करते हुए 60 से अधिक हैंडल से भागीदारी की और मजबूत जुड़ाव तथा प्रभावशाली समर्थन प्राप्त किया।

घरेलू कामगारों का पोस्टकार्ड अभियान

ट्वीट स्टॉर्म से बने माहौल द्वारा, दिल्ली, हरियाणा और छत्तीसगढ़ के लगभग 3,000 घरेलू कामगार 2020 के अंत से 2021 की शुरुआत में एक आंदोलन शुरू करने के लिए एक साथ जुड़े। यह स्वीकार करते हुए कि कार्यस्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न (रोकथाम, निषेध और निवारण, अधिनियम 2013, समानता का अधिकार, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और भेदभाव के खिलाफ अधिकार काफी हद तक उचित कार्यान्वयन पर निर्भर करता है। सभी महिला श्रमिकों ने कानून के उचित कार्यान्वयन पर विशिष्ट मांगों के साथ केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्री, और दिल्ली /हरियाणा राज्य महिला एवं बाल विकास विभाग प्रमुखों को पोस्टकार्ड भेजे।

इस पहल को मार्था फैरेल फाउंडेशन ने समर्थन दिया और नेटवर्क फॉर द राइट्स एंड वॉइसेस ऑफ डोमेस्टिक वर्कर्स , दिल्ली की सक्रिय भागीदारी प्राप्त की।

3000+

महिला घरेलू कामगार पीओएसएच अधिनियम, 2013 के तहत न्याय की मांग करते हुए महिला एवं बाल विकास मंत्रालय को 3 हजार से अधिक पोस्टकार्ड भेजे गए ।

कदम बढ़ाते चलो

कदम बढ़ाते चलो (केबीसी) कार्यक्रम अपने पांचवें वर्ष में चल रहा है, और युवाओं को अपने समुदायों में जेंडर आधारित हिंसा (जीबीवी) को समाप्त करने तथा सामूहिक कार्रवाई करने के लिए एक मंच प्रदान करता है। कार्यक्रम का अनूठा डिजाइन युवा लीडर्स को महिलाओं और लड़कियों के साथ हिंसा के खिलाफ कार्रवाई करने में एक कदम के रूप में अपने समुदायों के सदस्यों के साथ सक्रिय रूप से जुड़ने के लिए प्रोत्साहित करता है।

कदम बढ़ाते चलो के फैलोशिप मॉडल को कोविड-19 महामारी ने प्रभावित किया, विशेष रूप से किशोर लड़कियों के बीच उन समुदायों में जिन्हें कार्यक्रम में लक्ष्य बनाया गया था मोबाइल फोन से काम करना एक चुनौती बन गई हे । बाधाओं के बावजूद, महामारी की चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए कार्यक्रम की गतिविधियों को जारी रखा।

लॉकडाउन के दौरान युवा : ऑनलाइन फेलोशिप

केबीसी फ्लैगशिप कार्यक्रम के तहत, पार्टिसिपेटरी रिसर्च इन एशिया, प्रो सपोर्ट डेवलपमेंट और फोंटल डेवलपमेंट फाउंडेशन की साझेदारी में पानीपत, दिल्ली, देवघर और भुवनेश्वर में लॉकडाउन के दौरान किशोर लीडर्स के लिए एक ऑनलाइन फेलोशिप शुरू की गई थी। मुख्य धारा में जेंडर, डिजिटल साक्षरता, कानून, महत्वाकांक्षा मानचित्रण, और कविता कार्यशालाओं के माध्यम से कला-आधारित शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करने वाले सत्र आयोजित किए गए, जिसमें युवाओं के लॉकडाउन के महत्वपूर्ण अनुभव सामने आए।

लॉकडाउन के तहत किशोरः रूफटॉप कविता प्रदर्शनी

विश्व मासिक धर्म स्वच्छता दिवस (28 मई) और उसके बाद विश्व बाल श्रम निषेध दिवस (12 जून) के अवसर पर केबीसी फैलोशिप कार्यक्रम के तहत किशोर लीडर्स ने कविताएं प्रस्तुत कीं जिन्हें रूफटॉप पोएट्री सत्र में प्रदर्शित किया गया । राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन के तुरंत बाद आयोजित, रूफटॉप सत्र में जेंडर, सुरक्षा, मासिक धर्म और महामारी के कारण घरों और समुदायों में हिंसा में वृद्धि के मुद्दों पर चर्चा हुई है।

लॉकडाउन की अवधि के दौरान अपने घरों तक ही सीमित रहने वाली किशोरियों को कई तरीको से अपने विचार व्यक्त करने का अवसर मिला: वे न केवल उन विषयों पर अपनी चुप्पी तोड़ रही थी जो उनके लिए 'वर्जित' थे, बल्कि उन्होंने घरों से बहार निकलना भी शुरू किया। लॉकडाउन के उनके अनुभव, उनके घरों में बढ़ती हिंसा और मासिक धर्म के दिनों में सामने आने वाली चुनौतियों ने उनकी कविता के लिए एक मजबूत आधार दिया।

अंतर्राष्ट्रीय बालिका दिवस

दिल्ली के द्वारका और गुड़गांव में अंतर्राष्ट्रीय बालिका दिवस (11 अक्टूबर) से पहले और उस अवसर पर, हरिजन बस्ती के लगभग 20 किशोरी केबीसी कार्यक्रम के तहत अपने घरों और स्कूलों में पब्लिक प्लेसेस में सुरक्षा के मुद्दे पर चर्चा करने के लिए एक साथ आईं। फाउंडेशन ने किशोरियों के बीच मोबाइल फोन भी वितरित किए, तथ्य की रौशनी में महामारी के दौरान सूचना और सार्वजनिक क्षेत्र तक उनकी पहुंच को गंभीर रूप से प्रतिबंधित कर दिया गया था। मोबाइल फोन सुरक्षित बातचीत का आधार बन गया, क्योंकि ऑनलाइन सुरक्षा के पहलुओं और मोबाइल फोन के सही उपयोग पर भी चर्चा की गई।

30+

केबीसी कार्यक्रम के तहत हरिजन बस्ती, गुड़गांव, द्वारका और दिल्ली में 30 से अधिक किशोरियों को उनकी शिक्षा के लिए मोबाइल फोन दिए गए।

मार्था फैरेल पुरस्कार

मार्था फैरेल पुरस्कार 2016 में महिला सशक्तिकरण और जेंडर न्याय में उत्कृष्टता के लिए स्थापित किया गया था। इसे दो श्रेणियों में दिया जाता है: 'सबसे आशावान व्यक्ति' और 'जेंडर समानता के लिए सर्वश्रेष्ठ संगठन' 2020 में, एक नई श्रेणी एक संस्थान और एक व्यक्ति के लिए विशेष जूरी पुरस्कार' शुरू की गई। इन वर्षों में रिजवान अदातिया फाउंडेशन और ग्रामीण विकास ट्रस्ट के अटूट समर्थन के साथ, हम 8 विजेताओं को उनके पथप्रदर्शक कार्य में सहायता करने के लिए ₹ 1,50,000 का नकद पुरस्कार देने में सक्षम रहे | इसी तरह, विशेष जूरी पुरस्कार के विजेताओं को अपना काम जारी रखने के लिए पुरस्कार राशि मिली, और ये अल्काजी फाउंडेशन फॉर आर्ट के समर्थन से संभव हो पाया ।

2020 के विजेता

ममता सिंह
रूरल एंड एनवायरनमेंट डेवलपमेंट सोसाइटी

2020 विशेष जूरी पुरस्कार विजेता

वैशाली जेठावा
एसोसिएशन फॉर सोशल एंड ह्यूमन अवेयरनेस

अवार्ड जूरी

डॉ राजेश टंडन
फाउंडर -डायरेक्टर, प्रिया

नमिता भंडारे
जर्नालिस्ट - राइटर

डॉ. पंकज मित्तल
जनरल सेक्रटरी, एसोसिएशन ऑफ इंडियन यूनिवर्सिटीज

मोंचो फेरर
डायरेक्टर, रूरल डेवलपमेंट ट्रस्ट

फैसल अल्काजी
थिएटर डायरेक्टर

दीप्ति बोपायह
एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर, गोस्पोर्ट्स फाउंडेशन

नंदिता त्रिपाठी
पार्टनर, के पी एम जी इंडिया

मार्था फैरेल मेमोरियल फैलोशिप

डॉ. मार्था फैरेल प्रौढ़ शिक्षा और जेंडर-अनुकूल वातावरण बनाने के लिए प्रतिबद्ध थीं। उनके सम्मान में, फाउंडेशन ने पूर्वी अफ्रीकी और एशियाई देशों में उच्च शिक्षण संस्थानों के कर्मचारियों को मार्था फैरेल मेमोरियल फैलोशिप देने के लिए एसोसिएशन फॉर कॉमनवेल्थ यूनिवर्सिटीज के साथ भागीदारी की है। 3 दिवसीय गहन प्रशिक्षण के बाद, फेलो ने परिसरों में यौन उत्पीड़न को समाप्त करने के लिए प्रभावी कार्य योजनाओं को डिजाइन और कार्यान्वित किया। पिछले वर्षों के विपरीत, हमने अपने 2020 की बैच में फेलो की संख्या 4 से बढ़ाकर 3 कर दी। विजेता थे:

डॉ. स्कोलस्टिका औमोंडी

एसोसिएट डीन
स्कूल ऑफ लॉ
यूनिवर्सिटी ऑफ नैरोबी

डॉ. जॉर्जिना या औदूरो

लेक्चरर -रिसर्चर
यूनिवर्सिटी ऑफ केप कोस्ट घाना

डॉ. फात्मात्ता ताकि

डायरेक्टर
यूनिवर्सिटी ऑफ सिएरा लियॉन

एक्टिविज्म के 16 दिन, 2020

वर्ष 2020 का समापन एक्टिविज्म के 16 दिनों के दौरान कार्यक्रमों की एक बहुत ही सफल श्रृंखला के साथ हुआ। भारत में और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर फाउंडेशन ने विभिन्न हितधारकों के साथ सभी क्षेत्रों की महिलाओं के साथ सभी के लिए सुरक्षित स्थान बनाने के लिए चर्चा की।

बातचीत में शामिल थे:

मिशन की डिप्टी चीफ (डच) घरेलू कामगारों से मिले

मिशन की डिप्टी चीफ सुश्री एनेके अडेमा ने उन महिलाओं और लड़कियों के साथ जिन्होंने अपने जीवन में मोबाइल फोन की भूमिका और सुरक्षा के बड़े मुद्दे पर चर्चा की, जिन्हे शा द्वारा मोबाइल दिए गए थे। बातचीत, समुदाय में एक संसाधन केंद्र की स्थापना का आधार बनी ।

फाइट गर्ल फिल्म स्क्रीनिंग

भारत में नीदरलैंड के दूतावास ने फाउंडेशन के सहयोग से फिल्म 'फाइट गर्ल" की स्क्रीनिंग का भी आयोजन किया, इसके बाद दर्शकों (स्कूली बच्चों) द्वारा जेंडर और सुरक्षा को समझने के लिए रिफ्लेक्शन सर्कल का आयोजन किया गया। इन महत्वपूर्ण चर्चाओं में तिब्बती बस्तियों के छात्र, केबीसी फैलो और दार्जिलिंग के कैमेलिया स्कूल के छात्रों ने हिस्सा लिया था।

सुरक्षित कैंपस कार्यक्रम: भारतीय विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में तिब्बत के विधार्थी

भारत में तिब्बती विधार्थियों के साथ एक सुरक्षित कैंपस कार्यक्रम में सत्र का आयोजन किया गया जिसमें 14 कॉलेज के विधार्थी भाग ले रहे थे, इन्होने अपने विश्वविद्यालय में स्थानों की सुरक्षा और सुरक्षा की स्थिति का जायजा लिया।

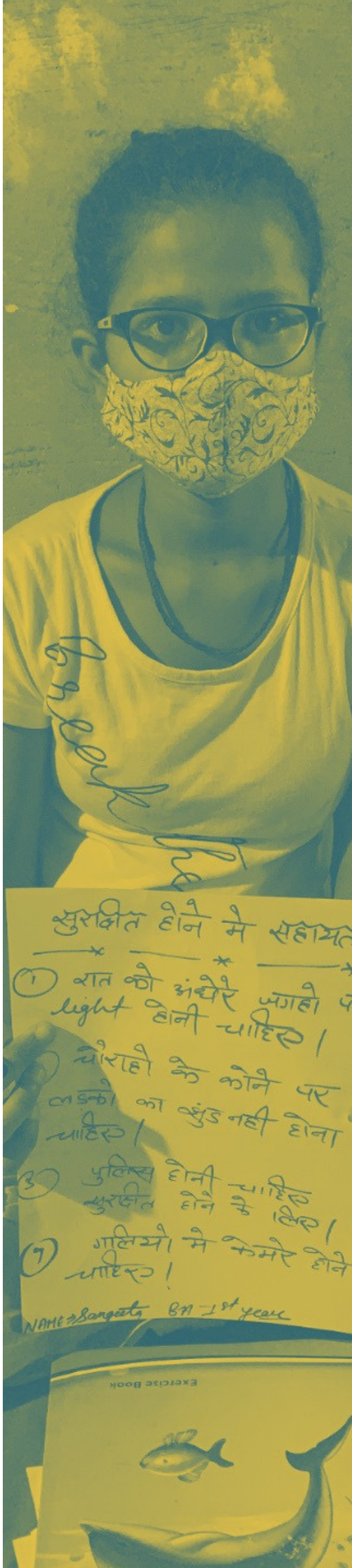

महिलाओं के लिए सुरक्षित पंचायत

फाउंडेशन ने पूरे भारत में सरकार में सत्ता के पदों पर महिलाओं के बीच सुरक्षा और सुरक्षा के बारे में बातचीत शुरू करने के लिए महाराष्ट्र की पंचायत में निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों के साथ 8 दिसंबर 2020 को चर्चा की। बातचीत का आयोजन रिसोर्स एंड सपोर्ट सेंटर फॉर डेवलपमेंट (आरएससीडी) और उनके महिला राजसत्ता अभियान के साथ मिलकर किया गया था ताकि महिला निर्वाचित नेताओं को शामिल किया जा सके और उनकी सुरक्षा की जा सके।

एमएफए विजेताओं का राउंडअप

मार्था फैरेल अवार्ड्स के विजेताओं के साथ पिछले पांच वर्षों में प्रतिबद्ध व्यक्तियों का नेटवर्क तैयार करते हुए, फाउंडेशन ने एक्टिविज्म के 16 दिनों के दौरान महिलाओं के साथ एक मंच का आयोजन किया जिसमें घरेलू और जेंडर आधारित हिंसा की स्थिति का कार्यस्थलों, समुदायों में और अन्य जगहों पर आज की स्थिति का पता लगाने के लिए, और आगामी वर्ष के लिए एक योजना तैयार करने के लिए, जहां यह नेटवर्क हिंसा की ऐसी घटनाओं को समाप्त करने के लिए मिलकर काम कर सके।

तिब्बती बेयरफुट परामर्शदाताओं के लिए सुरक्षा घेरा

जेंडर आधारित हिंसा के खिलाफ एक्टिविज्म के 16 दिनों में से अंतिम दिन विश्व मानवाधिकार दिवस पर, मार्था फैरेल फाउंडेशन ने कर्नाटक के टीडीएल बाइलाकुप्पे बस्ती के 45 तिब्बती बेयरफुट काउंसलर के साथ एक सुरक्षा मंडल का आयोजन किया। बातचीत को उनके काम की दुनिया में यौन और जेंडर-आधारित हिंसा की व्यापकता को, सलाहकारों के रूप में अपने कार्यों को करने में आने वाली चुनौतियों का पता लगाने, और एक सहभागी दृष्टिकोण का उपयोग करते हुए, काम के एक सुरक्षित, और अधिक सुदृढ़ भविष्य पर सिफारिशें विकसित करने के लिए डिजाइन किया गया था।

सोशल मीडिया समुदाय

2015 से, हमारे ऑनलाइन समुदाय में लगातार वृद्धि हो रही है। इस साल के कार्यक्रमों ने हमें कई नए दर्शकों से जोड़ा है, जिसने हमारे समाज को रोजमर्रा की जिंदगी में नारीवाद के प्रति अधिक प्रतिबद्ध और मजबूत बनाया है।

2,915
/marthafarrellfoundation

1,502
/FoundationMf

601
/marthafarrellfoundation

535
/company/martha-farrell-foundation/

349

गवर्नेंस

गवर्निंग बोर्ड एमएफएफ के मामलों के प्रबंधन के लिए सांविधिक निकाय है। गवर्निंग बोर्ड की सदस्यता। 2020-2021 के लिए है:

डॉ राजेश टंडन
अध्यक्ष, पार्टिसिपेटरी रिसर्च
इन एशिया (PRIA)
अध्यक्ष

सुहैल फैरेल टंडन
निदेशक-संस्थापक,
प्रो सपोर्ट डेवलपमेंट
कार्यकारी निदेशक

तारिका फैरेल टंडन
एमए राजनीति विज्ञान,
कार्लटन विश्वविद्यालय, कनाडा
संस्थापक-निदेशक

रीता सरीन
उपाध्यक्ष और निदेशक,
द हंगर प्रोजेक्ट
चेयरपर्सन, प्रिया
गवर्निंग बोर्ड - निदेशक

मार्था फैरेल फाउंडेशन

CONTACT
42 तुगलकाबाद इंस्टीट्यूशनल एरिया नई दिल्ली - 440062
ईमेल : info@marthafarrellfoundation.org | **वेबसाइट**: marthafarrellfoundation.org